औषधीय पौधों की खेती विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

आज दिनांक 08 जुलाई, 2013 को संस्थान द्वारा ''औषधीय पौधों की खेती'' विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। यह प्रशिक्षण वन एवं पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आयोजित '' अन्य श्रेणी के हितग्राहियों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम'' योजना के तहत है। इसका प्रमुख उद्देश्य मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचलों से आये किसान भाइयों, अयापकों, बैंक अधिकारियों, छात्रों, गैर सरकारी संगठनों, जनप्रतिनिधियों एवं पत्रकारों को औषधीय पौधों की खेती के बारे में प्रशिक्षण एवं जानकारी देना है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि माननीय श्री भारत सिंह यादव, अध्यक्ष जिला पंचायत जबलपुर का स्वागत संस्थान के निदेशक डॉ0 यू. प्रकाशम द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का विधिवत् उद्घाटन किया ।

संस्थान के माननीय निदेशक महोदय डॉ0 यू. प्रकाशम ने अपने उद्बोधन में कहा कि लगभग पिछले ढाई दशक से औषधीय पौधों की खेती के महत्व बढ़ा है। उन्होंने कहा कि प्रकृति ने मानव जाति को लघुवनोपज औषधीय एवं सुगंधित पौधे अमूल्य उपहार के रूप में प्रदान किये हैं। हम इन पौधों का उपयोग आदिकाल से अपने जीवन–यापन एवं विभिन्न रोगों के निदान हेतु करते रहे हैं। पहले यह वनस्पत्तियां हमें घरों के आसपास वनों से आसानी से प्राप्त हो जाती थीं किन्तु आज इनकी बढ़ती हुई मॉग के कारण इनका

वनों से बड़ी मात्रा में विदोहन हो रहा है जिससे औषधीय पौधों की उपलब्धता प्राकृतिक परिवेश में घटती जा रही है। आज स्थिति यहॉ तक पहुॅच गयी है कि कई वनस्पतित्यॉ विलुप्त होने के कगार पर हैं। इसलिए अब केवल वनों का दोहन कर इनकी बढ़ती मॉग को पूरा कर पाना सम्भव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि वनों में इनका संरक्षण हो तथा बढ़ती हुई मॉग की खेती करके पूरा किया जाये। परन्तु पर्याप्त जानकारी के अभाव में ज्यादातर किसान इनकी खेती ठीक प्रकार से नहीं कर पा रहे हैं। इसी तारतम्य में शासन ने किसान भाइयों एवं हितग्राहियों को औषधीय पौधों की खेती के बारे में प्रशिक्षण देना प्रारम्भ कर दिया है।

निदेशक महोदय ने अपने उद्‌बोधन में औषधीय पौधों की बाजार व्यवस्था पर भी प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि हितग्राही औषधीय पौधों की खेती करने से पहले उनके विपणन की जानकारी सुनिश्चित कर लें। उन्होंने कहा कि विश्व में औषधीय पौधों का लगभग 1 अरब से अधिक का बाजार है। अतः हितग्राही औषधीय पौधों की खेती कर प्रशिक्षण प्राप्त कर लाभ कमा सकते हैं। देश से निर्यात होने वाले कुल औषधीय पौधों में 70 प्रतिशत मध्य भारत से है।

माननीय जिला पंचायत अध्यक्ष, श्री भारत सिंह यादव ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज के समय में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है। रासायनिक उर्वरकों के उपयोग ने जीवन को खतरे में डाल दिया है। उन्होंने प्राचीन समय से प्रयाग में आ रही जड़ी–बूटियों जैसे कि सर्पगन्धा, अश्वगंधा आदि के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि प्राचीन समय से ही जड़ी–बूटियों का उपयोग बड़े–बड़े रोगों के उपचार में होता रहा है। एलोपैथिक दवाओं का अत्यधिक मात्रा में सेवन करने से शरीर को काफी क्षति पहुॅचती है जबकि देशी जड़ी–बूटियों के प्रयोग से मानव शरीर ज्यादा स्वस्थ रहता है।

उन्होंने हितग्राहियों एवं प्रशिक्षणार्थियों से अनुरोध किया कि वे उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान द्वारा ''औषधीय पौधों की खेती'' पर दिये जा रहे प्रशिक्षण को ठीक से ग्रहण कर अपने रोजगार का साधन बनाये एवं संस्थान से मिलने वाले इस ज्ञान को अपने तक ही सीमित न रखते हुए अन्य हितग्राहियों जो कि इस प्रशिक्षण में भाग नहीं ले पा रहे, तक भी पहुॅचायें जिससे कि वे लोग भी लाभान्वित हो सकें। उन्होंने पुनः अनुरोध किया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में बताई जाने वाली वैज्ञानिक रूप से विकसित तकनीकों को अपने व्यवसाय में अपनाकर अधिक लाभ अर्जित करें जिससे कि आप लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो सके।

प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन दिनों अर्थात् 08 जुलाई, 2013 से 10 जुलाई, 2013 तक चलेगा एवं विशेषज्ञ वैज्ञानिकों द्वारा महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती एवं विपणन पर व्याख्यान एवं प्रशिक्षण दिया जायेगा।

कार्यक्रम के उद्घान समारोह में संस्थान के सभी वैज्ञानिक एवं आफीसर उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह का समापन डॉ0 नितिन कुलकर्णी, प्रभागाध्यक्ष, वन विस्तार प्रभाग द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत कर किया गया ।